दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 16.09.2023

प्रकाशनार्थ

मानव का अस्तित्व प्रकृति के बिना संभव नही ं– प्रो. ओमप्रकाश सिंह, प्राचार्य

दिनांक 16.09.2023 गोरखपुर। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के भूगोल विभाग में अंतर्राष्ट्रीय ओजोन दिवस के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह एवं मुख्य वक्ता श्री जितेंद्र कुमार पाण्डेय सहायक आचार्य भूगोल विभाग रहे।

मुख्य वक्ता ने ओजोन परत के क्षरण एवं उसके बचाव के उपायों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ओजोन परत के बचाव हेतु किए जा रहे अंतरराष्ट्रीय प्रयासों एवं समझौता पर चर्चा अनिवार्य है। मुख्य वक्ता ने बताया कि मानव को ओजोन परत के क्षरण से बचाव के लिए भौतिक सुख सुविधा वाले वस्तुओं का उपयोग कम करना चाहिए होगा। रेफ्रिजरेटर, एयर कण्डिसनर, सुगंधित परफ्यूम आदि वस्तुओं से सीएफसी गैसें निकलती है जिससे ओजोन को हानि पहुंचती है और ओजोन में छिद्र होने की संभावना बढ़ती जाती है। ओजोन परत का होना पृथ्वी जीवन के लिए अति आवश्यक है क्योंकि यह सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों को अवशोषित करती है। ओजोन परत के क्षरण से मानव को त्वचा रोग, कैंसर, आंख की समस्या तथा रोग प्रतिरोधन क्षमता में कमी जैसी गंभीर बिमारियों का सामना करना पड़ सकता है। इसका प्रभाव केवल मानव जीवन पर ही नहीं अपितु पूरी पृथ्वी पर पड़ता है। इसके प्रभाव से वनस्पतियाँ तथा कृषि उत्पादन भी प्रभावित होता है। ओजोन परत के संरक्षण हेतु हमें अपने भौतिक सुख सुविधाओं में कमी करने के साथ ही अधिक से अधिक वृक्षों को लगाना चाहिए। जिससे वायुमंडल में जाने वाली हानिकारक गैसों का प्रभाव कम हो सके।

विशिष्ट अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने इस अवसर पर अपने विचार रखें। इन्होंने कहा कि मानव का अस्तित्व प्रकृति के बिना संभव नहीं है। हमें प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। पश्चिमी देशों की अंधा–धुंध विकास प्रक्रिया ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया है; जिसके परिणामस्वरूप हम ओजोन क्षरण, जलवायु परिवर्तन, कृषि पर नकारात्मक प्रभाव तथा सागरीय जल के स्तर में वृद्धि के रूप में देख रहे हैं। पश्चिमी देशों के लोग वर्तमान समय में उपलब्ध संसाधनों के उपयोग पर अधिक बल देते हैं जबकि हमारे देश के लोग भविष्य में आने वाली पीढियां के लिए संसाधनों को संरक्षित करने पर ध्यान देते है। आज वर्तमान समय में विकास की अनियोजित प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ओजोन क्षरण की समस्या सबसे गंभीर होती जा रही है । यह परत सूर्य से निकलने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों को अवशोषित करती है इसलिए ओजोन परत को पृथ्वी की सुरक्षा कवच या छतरी भी कहा जाता है। ओजोन परत के संरक्षण के लिए हमें एक साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है; नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब इस धरती से जीवन समाप्त हो जाएगा। साथ ही प्राचार्य जी ने बच्चों को यह संकल्प दिलाया कि हमें प्रत्येक सुअवसरों पर अपने आसपास एक वृक्ष जरूर लगाना चाहिए ताकि हम पर्यावरण को शुद्ध करने तथा ओजोन परत के क्षरण को रोकने में अपनी भूमिका निभा सके।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमलेश कुमार मौर्य तथा आभार ज्ञापन डॉ. अनिल भास्कर ने किया। इस अवसर पर भूगोल विभाग के प्राध्यापक डॉ. रविंद्रनाथ, डॉ. अनूप राय, डॉ. रविंद्र कुमार, डॉ. अनुपमा मिश्रा तथा डॉ. संजीत कुमार सिंह सहित स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ.) सुनील कुमार सिंह
सह–प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क